Tender Heart High School, Sector-33B Chandigarh

कक्षा - नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - 6 'बड़े घर की बेटी' (कहानी) लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या - 32 में दिए पाठ - 6 'बड़े घर की बेटी' नामक कहानी का शेष भाग पढ़ेंगे।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि श्रीकंठ ने आनन्दी के पास पहुँचने पर पूछा कि तुमने घर में उपद्रव क्यों मचा रखा है। तब आनन्दी ने श्रीकंठ से सारी घटना कह सुनाई और बताया कि लाल बिहारी के प्रहार करने पर उसका सिर फूटते - फूटते बचा। यह कहकर आनन्दी रोने लगी। पत्नी के आँसू व लालबिहारी के पशुवत व्यवहार से श्रीकंठ क्रोध से भड़क गया। अतः अपनी ही स्त्री पर अत्याचार को बर्दाश्त करना असहनीय हो जाने पर प्रातः होते ही श्रीकंठ ने पिता जी से कह दिया कि अब इस घर में मेरा रहना संभव नहीं है। बेनीमाधव सिंह ने अपने बड़े पुत्र श्रीकंठ को समझाने की कोशिश की लेकिन वे लालबिहारी की गलती मानने को तैयार नहीं थे। दोनों में तीखी बहस होने लगी। ठाकुर साहब को भी क्रोध आ गया। इसी बीच गाँव के कुछ ऐसे लोग जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति से जलते थे, ठाकुर के परिवार का तमाशा

देखने किसी न किसी बहाने से वहाँ एकत्र होने लगे। बेनीमाधव उनका इरादा भाँप गए इसलिए उन्होंने बात पलटने की कोशिश की लेकिन अनुभवहीन श्रीकंठ अपने पिता का आशय न समझ सके और आवेश में आकर अपना फैसला सुनाते हुए कहा था कि या तो लाल बिहारी घर में रहेगा या वह।

बच्चो! अब हम इस पाठ को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या अड़तीस से समझने का प्रयास करेंगे। इसमें बताया गया है कि बेनीमाधव सिंह ने श्रीकंठ से लाल बिहारी का अपनी भावज (आनन्दी) के साथ दुर्व्यवहार और उसके खड़ाऊँ मारने की भूल को क्षमा कर देने का आग्रह किया। अपने पिता की बात सुनकर श्रीकंठ आवेश में आ गया। उसने अपना अंतिम निश्चय कह सुनाया कि इस घर में या तो वह रहेगा या लाल बिहारी। यदि उन्हें लाल बिहारी प्यारा है तो उसे विदा करें और यदि वह उसे रखना चाहते हैं तो लाल बिहारी से कहें, वह घर छोड़कर चला जाए।

लालबिहारी दरवाज़े की चौखट पर खड़ा चुपचाप बड़े भाई की बातें सुन रहा था। लाल बिहारी के प्रति श्रीकंठ का हार्दिक स्नेह था। वह अपने पिता से अधिक बड़े भाई का लिहाज करता था। जब श्रीकंठ इलाहाबाद से आते थे तो लाल बिहारी के लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते थे। पिछले साल नाग पंचमी के दिन अखाड़े में बराबर के पहलवान को लालबिहारी ने हरा दिया था तो श्रीकंठ ने उसे अखाड़े में जाकर ही गले लगाया था और पाँच रुपए के पैसे लुटाए थे। आज श्रीकंठ के मुँह से दुःख देने वाली बातें सुनकर लाल बिहारी को ग्लानि हो रही थी अर्थात् गलती का अहसास हो रहा था। वह अपने भाई के सामने आने में शर्म महसूस कर रहा था

वह अपने किए पर पछता रहा था। वह पढ़ा-लिखा नहीं था लेकिन वह इतना समझदार था कि उसे लगा कि भैया ने उसे समझाया नहीं, सीधा अपना निर्णय सुना दिया। यह तो भैया (श्रीकंठ सिंह) अन्याय कर रहे हैं यदि वह उसे बुलाकर दो-चार तमाचे लगाकर कड़ी बात कह देते तो शायद इतना दुःख न होता जितना उनका यह कहना कि मैं उसकी (लाल-बिहारी) की सूरत नहीं देखना चाहता। लालबिहारी के लिए ये बातें असहनीय थीं। वह रोता हुआ घर आया और आनन्दी के द्वार पर जाकर कहा कि भैया ने निश्चय किया है कि वे मेरे साथ घर में नहीं रहेंगे। अब वे मेरा मुँह भी नहीं देखना चाहते। लालबिहारी ने आनन्दी से भी अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी। इतना कहते-कहते उसका गला भर आया। उसने कहा कि मैं जाता हूँ, उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।

श्रीकंठ ने जब लालबिहारी को आनन्दी के द्वार पर खड़ा पाया तो उन्होंने घृणा से आँखें फेर लीं और कतराकर अर्थात् नज़र बचाकर निकल गए। आनन्दी स्वभाव से दयालु थी। उसे इसका तनिक भी ध्यान न था कि बात इतनी बढ़ जाएगी। जब उसने लाल-बिहारी को क्षमा माँगते सुना तो उसका रहा-सहा क्रोध भी खत्म हो गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे तथा इन्हीं आँसुओं से उसके मन का मैल धुल गया।

आनन्दी ने बेशक अपने देवर की शिकायत की थी किन्तु अपने स्वभाव के अनुसार उसे अब पछतावा हो रहा था। आनन्दी दया की मूर्ति थी। लालबिहारी के माफ़ी माँगने पर उसका क्रोध कहीं खो जाता है और उसकी आँखें नम हो जाती हैं।

आनन्दी ने श्रीकंठ को समझाते हुए कहा कि लाल-बिहारी खड़े बाहर रो रहे हैं। उन्हें भीतर बुलाकर क्षमा कर दो अन्यथा वह घर छोड़कर चला गया तो पछताओगे। वह अपनी गलती पर शर्मिंदा है।
जब लाल बिहारी घर छोड़कर जाने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़ा तो आनन्दी ने बाहर आकर उसका हाथ पकड़ लिया और उसे घर न छोड़ने के लिए अपनी कसम दी क्योंकि आनंदी का क्रोध अब शांत हो चुका था।

घर छोड़कर जाते हुए लाल बिहारी ने घर में रहने के लिए यह शर्त रखी कि जब तक मुझे यह मालूम न हो जाए कि भैया का मन मेरी तरफ़ से साफ़ हो गया है तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा। लाल बिहारी द्वारा माफ़ी माँगने पर श्रीकंठ का हृदय पिघल गया। दोनों भाई एक-दूसरे से गले मिलकर खूब फूट-फूट कर रोने लगा। बाहर से आते ही बेनीमाधव सिंह ने जब दोनों भाइयों को गले मिलते देखा तो वे बहुत प्रसन्न हुए और वे आनन्दी की प्रशंसा में बोले कि बड़े घर की बेटियाँ कई बार बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि आनन्दी ने बिगड़ी बात को संभाल लिया था अर्थात् दोनों भाइयों को आनन्दी ने एक छोटी-सी बात के लिए एक-दूसरे से अलग होने से बचा लिया था गाँव के सभी लोगों ने भी आनन्दी की उदारता की प्रशंसा की।

बच्चो। आज हमारा यह पाठ समाप्त हो चुका है। सभी छात्र इस पाठ को पुनः पढ़ेंगे एवं समझेंगे पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ को भी ध्यान में रखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"भाभी भैया ने निश्चय किया है कि मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। अब वे मेरा मुँह भी नहीं देखना चाहते, इसलिए मैं जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।"

प्रश्न (1) भाभी और भैया का परिचय दीजिए। भैया ने क्या निश्चय किया था और क्यों ?
प्रश्न (2) आनन्दी के स्वभाव की चर्चा कीजिए। वह अपने पति पर किस बात के लिए झुँझला रही थी।
प्रश्न (3) आनन्दी की अपने पति से क्या बातचीत हुई ?
प्रश्न (4) घटनाक्रम ने अंत में किस प्रकार मोड़ लिया ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]